इकाई 1 चीन : एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 चीन के बारे में बदलती समझ

1.3 चीन का ऐतिहासिक विकास

1.4 चीनी चिन्तन का विकास और बौद्ध धर्म का प्रभाव

1.5 चीनी शाही राज्य और स्टेपी (Steppe) की चुनौती

1.6 सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन

1.7 छिंग (Qing) राजवंश

1.8 उन्नीसवीं शताब्दी से पूर्व चीन और विश्व

1.9 सारांश

1.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप इनके बारे में जानेंगे :

- कि किस प्रकार हाल की विद्वता ने चीन के इतिहास की समझ और इसकी सभ्यता की आवश्यक विशेषताओं के बारे में हमारी समझ बदली है;
- चीनी इतिहास की कुछ मुख्य युगांतकारी घटनाएँ और रुझान;
- छिंग (Qing) चीन पर शासन करने वाले अंतिम शाही राजवंश के बारे में; और
- 19वीं सदी के मध्य से पूर्व विश्व के साथ चीन के सम्बन्धों की प्रकृति।

1.1 प्रस्तावना

यह इकाई 1840 से 1978 तक चीन के आधुनिक इतिहास की गति और दिशा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि प्रस्तुत करेगी। चीन दुनियाँ में निरंतर अस्तित्व में रहने वाली सबसे पुरानी सभ्यताओं और राजनैतिक व्यवस्थाओं में से एक है। इसका मतलब यह है कि इसके अधिक हाल के इतिहास को इसके कई शताब्दियों लम्बे और घटनापूर्ण इतिहास के संदर्भ में ही समझा जा सकता है।

जैसे-जैसे आप 1840 से 1978 तक चीन के पाठ्यक्रम से गुजरते हैं, आपके दिमाग में कुछ प्रश्न जो हो सकते हैं, इस प्रकार हैं :

- चीनी अर्थव्यवस्था की प्रकृति क्या थी जिसने न केवल सदियों से एक फलती-फूलती सभ्यता और साम्राज्य को बनाए रखा, बल्कि दुनिया भर के व्यापारियों और प्रशंसकों को भी आकर्षित किया?
- कैसे चीनी साम्राज्य की इतनी विशाल और शक्तिशाली राजनैतिक व्यवस्था टूट कर

छोटी इकाइयों मे विभक्त हो गई और फिर बीसवीं शताब्दी में पचास वर्षों की अल्प-अवधि में कैसे इसका पुनर्गठन हो गया?

- कैसे एक देश जो उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य से विदेशी शक्तियों द्वारा बार-बार पराजित और बेआबरू हुआ, इस परिस्थिति पर कुछ दशकों के भीतर काबू पाने और एक शक्तिशाली राज्य के रूप में फिर से उभरने के लिए तैयार हुआ?

इन और अन्य सवालों के कुछ जवाब इस इकाई में चीन के अतीत की समझ के माध्यम से पाए जा सकते हैं।

1.2 चीन के बारे में बदलती समझ

कुछ समय पहले तक, चीन के आधुनिक इतिहास के बारे में हमारी अधिकांश समझ उन्नीसवीं और बीसवीं सदी की शुरुआत में चीन के पश्चिमी लोगों के वर्णनों से प्रभावित रही है। जैसा की आप जानते हैं, यह पाठ्यक्रम उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य से शुरू होता है, जब चीन को पश्चिमी शक्तियों और बाद में जापान के हाथों अपमानजनक हार की श्रृंखलाओं का सामना करना पड़ा था। इसके बाद के दशकों के लिए चीन के बारे में पश्चिमी वर्णन यह दिखाने के लिए चिंतित थे :

- पश्चिम द्वारा चीन पर हमला ऐतिहासिक रूप से क्यों अपरिहार्य या तर्क संगत था;
- बीसवीं सदी की शुरुआत में शाही चीन की हार और पतन पहले से ही ज्ञात निष्कर्ष था;
- चीन, पश्चिम को पर्याप्त रूप से 'प्रतिउत्तर देने' और 'आधुनिकीकरण' करने में क्यों विफल रहा;
- क्यों बीसवीं सदी के मध्य में चीन 'साम्यवाद से हार गया था'।

इसका नतीजा यह हुआ कि लम्बे समय तक चीन पर पश्चिमी विद्वता ने पारंपरिक चीनी समाज और राज्य की संकीर्ण और अपरिवर्तनशील प्रकृति पर जोर दिया, और इनके कारण यह कहा गया कि चीन स्वयं को बाहरी दुनियाँ के लिए और आधुनिक युग की चुनौतियों का सामना करने के लिए सुधारों को आरंभ करने में असमर्थ रहा। 'चीन की विफलता' के वृतान्त से प्रेरित, इसने शाही व्यवस्था और पारंपरिक संस्कृति की कमजोरी और अधोगति, विशेषकर अंतिम राजवंश छिंग (Qing) के तहत, पर जोर दिया।

इसके अलावा, पश्चिमी वर्णनों ने 'चीनी केन्द्रवाद' की अवधारणा को सामने रखा। इस धारणा के अनुसार चीनियों का मानना था कि वे विश्व के केन्द्र में थे इसलिए उन्होंने अन्य लोगों और देशों को हेय दृष्टि से देखा। परिणामस्वरूप, ये अन्य देशों से सीखने और समान एवं सम्प्रभु राष्ट्र राज्यों की अवधारणा के आधार पर एक विश्व-व्यवस्था के साथ जुड़ने के लिए तैयार नहीं थे।

हाल की विद्वता ने चीन के इतिहास को देखने के लिए 'असफलता' की कथा के चश्में से, विशेष रूप से हाल की सदियों में, देखने को खारिज कर दिया है। वास्तव में, मौजूदा समय में विद्वान चीन के अतीत और इसकी परंपराओं पर दृष्टिपात करके, हाल के दशकों में चीन के अभूतपूर्व उत्थान की व्याख्या करने में ज्यादा रुचि दिखाते हैं। कम से कम वे 19वीं सदी में चीन के अपकर्ष और पतन को अधिक प्रमुखता देने को गलत मानते हैं।

परिप्रेक्ष्य में बदलाव का एक दिलचस्प मामला यह भी है कि 'आधुनिक चीन' की शुरुआत कब से मानी जाए। आधुनिक चीनी इतिहास पर अनेक पाठ्यक्रम, जिनमें से एक यह भी शामिल है, उन्नीसवीं सदी के मध्य में अफीम युद्धों से शुरू होते हैं क्योंकि यह माना जाता था कि पश्चिमी शक्तियों के हाथों पराजय से मिले बाहरी आघात ने चीन में आधुनिकीकरण की प्रक्रियाओं को गति प्रदान की। हालाँकि, अर्थव्यवस्था के व्यवसायीकरण, शहरीकरण, साक्षरता के प्रसार, तकनीकी विकास और इसी तरह की प्रक्रियाओं के अध्ययन के आधार पर, विद्वान अब आधुनिक चीन की शुरुआत सत्रहवीं सदी के मध्य में छिंग (Qing) काल से या सोलहवीं और सत्रहवीं सदियों में 'मिंग-छिंग (Ming-Qing) संक्रमण' या ग्याहरवीं और बारहवीं शताब्दियों के इर्द-गिर्द और अधिक पहले शुंग (Song) काल से मानने की ओर प्रवृत्त हो रहे हैं। दूसरे शब्दों में पश्चिम द्वारा चीन पर हमले से पहले चीन में ऐसी आन्तरिक प्रक्रियाएँ चल रही थी जिनकी सादृश्यता प्रारंभिक आधुनिक यूरोप से थी।

अन्त में, यह धारणा कि चीन और चीनी लोग गैर चीनी लोगों के प्रति तिरस्कारपूर्ण रवैया रखते थे और स्वयं को बाहरी दुनियाँ से पृथक रखने की कोशिश करते थे, अब विश्वसनीय नहीं माना जाता। अपनी लंबी सभ्यता के क्रम में, चीन ने अनेक दिशाओं से प्रभावों को अवशोषित किया है, और यहाँ तक कि उनके द्वारा इसको गहराई से रूपान्तरित किया गया। इस सम्बन्ध में सबसे महत्वपूर्ण उदाहरण बौद्ध धर्म का है, जो मध्य और दक्षिण पूर्व एशिया के माध्यम से, भारतीय उपमहाद्वीप से चीन आया था। इसके अलावा, शाही चीन को विदेशी व्यापार के प्रति उदासीन या उसके विरोधी के रूप में देखने से हटकर, वर्तमान विद्वता इस बात पर जोर देती है कि चीन वास्तव में यदि पहले नहीं तो कम से कम सोलहवीं शताब्दी से वैश्विक व्यापार प्रवाह के केन्द्र में था। इससे पहले भी चीन अंतर-एशियाई फलते-फूलते व्यापार में एक प्रमुख भागीदार था। चीन के सबसे महत्वपूर्ण उत्पाद–रेशम, चीनी मिट्टी के बर्तन और चाय ने हमेशा दूर-दराज के व्यापारियों को आकर्षित किया था, और इसके इतिहास में कुछ निश्चित अवधि को छोड़कर चीन के शासकों ने विदेशी व्यापार के लाभों को समझा था और इसे सुविधाजनक बनाया था।

1.3 चीन का ऐतिहासिक विकास

यूरेशियन भू-भाग के पूर्वी छोर के क्षेत्र में आज जिससे चीन गठित होता है, वह महाद्वीपीय आकार और विविधता का क्षेत्र है। इसमें दो प्रमुख पश्चिम-पूर्व नदी प्रणालियों के, येल्लो और यांगसी नदियों के, उपजाऊ मैदान शामिल हैं और इसके साथ अनेक जल मार्ग भी हैं। एक लंबा तटीय क्षेत्र, जो विशेष रूप से दक्षिणी भाग में सकींर्ण और पहाड़ी है; दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम में घने जंगलों वाली पहाड़ियाँ; उच्च तिब्बती पठार और उसके आगे पश्चिम और दक्षिण-पश्चिम में हिमालय की श्रृंखलाएँ इसका भाग हैं। इसके अतिरिक्त, इसके सुदुर पश्चिम और उत्तर-पश्चिम में एक विशाल और शुष्क रेगिस्तानी क्षेत्र और उत्तर-पूर्व में साइबेरिया की सीमा से लगे वनों के समशीतोष्ण क्षेत्र आते हैं।

चीन के हाल के दशकों में असाधारण पुरातात्विक सामग्री की खोज यह दर्शाती है कि प्रारंभिक दूसरी सहस्राब्दी बी.सी.ई. से इस भूखंड के व्यापक रूप से फैले हुए क्षेत्रों में कास्य युग की सभ्यता के अनेक केन्द्र थे। यद्यपि वे एक दूसरे पर परस्पर प्रभाव डालते थे, और उनमें कुछ सामान्य विशेषताएं साझा थी, जैसे कि कांस्य ढ़लाई की अत्यधिक परिष्कृत प्रक्रिया, वे अनेक मामलों में एक दूसरे से काफी अलग भी थे। अब तक, सबसे व्यापक सामग्री उत्तरी चीन के अन्यांग क्षेत्र में पाई गई है और इनकी पहचान शांग के रूप में ज्ञात एक राज्य के केन्द्र के रूप में हुई है। पुरातात्विक साक्ष्य स्पष्ट रूप से एक स्तरीकृत समाज और एक धर्म शासित राज्य को दर्शाते हैं, जिसके नियन्त्रण में विशाल श्रमशक्ति थी। सबसे महत्वपूर्ण है कि वह दर्शाते हैं कि लोगों ने इस समय एक लिखित भाषा को

स्पष्ट रूप से विकसित कर लिया था जिसको वर्तमान चीनी-लिपि की पूर्वगामी लिपि के रूप में पहचाना गया है। यह मुख्य रूप से हजारों 'प्राक्ख्यापन अस्थियों' (oracle bones) के अवशेषों द्वारा देखा जाता है, जिसके माध्यम से शांग वंश के शासकों ने दिव्य दुनियाँ के साथ बातचीत करने की कोशिश की थी।

दूसरी सहस्राब्दी बी.सी.ई. के अन्त में, शांग (Shang) शासकों को उन लोगों द्वारा पराजित कर दिया गया जिन्होंने जोउ (Zhou) राजवंश की स्थापना की थी। यह चीनी इतिहास में सबसे लंबे समय तक चलने वाला राजवंश था जिसका अन्त तीसरी शताब्दी बी.सी.ई. में हुआ। जोउ (Zhou) पहला राजवंश है, जिसके लिए साहित्यिक रिकॉर्ड उपलब्ध हैं। यह वह समय है जब चीन में विचारों के सबसे महत्वपूर्ण शास्त्रीय मतों की नींव रखी गई थी। (नीचे देखें) इसके अलावा, लोहे के उपयोग से कृषि उत्पादकता और धन-दौलत में वृद्धि हुई और शक्तिशाली सैन्य हथियारों में बहुत अधिक वृद्धि हुई। हालाँकि, जोउ (Zhou) शासकों द्वारा सीधे शासित वास्तविक क्षेत्र बहुत बड़ा नहीं था, और शाही परिवार और कुलीन वर्ग के सदस्यों द्वारा शासित एक बहुत बड़ा क्षेत्र था जो जोउ (Zhou) अधिपति के प्रति निष्ठा रखते थे। जोउ (Zhou) काल के बाद के भाग में लगभग आठवीं शताब्दी बी.सी.ई. से, जोंगगुओ (Zhongguo) (या केन्द्रीय राज्यों) के रूप में जाने वाले क्षेत्रों में रियासतों के बीच प्रतिद्वंद्विता और युद्ध बढ़ गये जिससे कुछ और अधिक शक्तिशाली हो गये और अपने से कमजोर प्रतिद्वन्द्वियों को निगल गये। वास्तव में जोउ काल की अंतिम दो सदियों को युद्ध लिप्त राज्यों के काल के रूप में जाना गया है। यह प्रतियोगिता चीन के उत्तर पश्चिमी क्षेत्र में छिंन (Qing) राज्य के शासक की जीत के साथ समाप्त हुई, जिसने एक एकीकृत साम्राज्य स्थापित किया और 221 बी.सी.ई. में स्वयं को 'छिन का पहला सम्राट' छिन शिहुआंगड़ी (Qin Shihuangdi) घोषित किया।

1.4 चीनी चिन्तन का विकास और बौद्ध धर्म का प्रभाव

जोउ (Zhou) के तहत धन-दौलत की वृद्धि और नई प्रौद्योगिकियों के उदय के साथ-साथ इस अवधि के उत्तरार्द्ध में बढ़ते युद्ध और व्यवस्था के भंग होने से एक प्रकार की सामाजिक और बौद्धिक उत्तेजना को बढ़ावा मिला और तथाकथित 'सौ मतों' का पदार्पण हुआ। विभिन्न दार्शनिकों और विचारकों ने अपने चारों ओर हो रहे तेजी से बदलावों के बारे में समझ बनाने की कोशिश की।

निश्चित रूप से उनमें से सबसे प्रसिद्ध और सबसे प्रभावशाली कन्फ्यूशियस था, जो 550 बी.सी.ई. में पैदा हुआ और जिन्हें चीनी में मास्टर कुंग (Kong) या कुंगफूजी (Kongfuzi) के रूप में जाना जाता है। कन्फ्यूशियस ने जो व्यवस्था का टूटना देखा उस पर अफसोस जाहिर किया और नैतिक पतन को इसका कारण माना। उन्होंने उन स्वर्णिम दिनों की तरफ दुबारा लौटने की विनती की जब लोगों के बीच सम्बन्ध और पारस्परिक कर्तव्यों को आदर भाव से देखा जाता था, जैसे कि शासक और शासित के बीच, पिता और पुत्र के बीच और अन्य पारिवारिक रिश्ते। लेकिन अधिक महत्वपूर्ण रूप से, उनका मानना था कि व्यवस्था और समृद्धि को सही मायने में पुनर्स्थापित किया जा सकेगा जब 'प्रतिभाशाली व्यक्ति' देश पर शासन करेंगे। कन्फ्यूशियस का मानना था कि ऐसे पुरुषों के लिए आवश्यक गुण जन्म पर नहीं बल्कि शिक्षा और योग्यता पर निर्भर करते थे। शिक्षा के माध्यम से अर्जित योग्यता की प्रधानता, और दैवीय अधिकार पर आधारित सरकार की बजाए 'सदगुण द्वारा सरकार' की धारणा, कन्फ्यूशियसवादी दर्शन की विशिष्ट विशेषताएं हैं। बाद में कन्फ्यूशियस के शिष्य मेनशियस यह तर्क देकर इस विचार का विस्तार किया कि लोगों को एक गैर-सदाचारी शासक के खिलाफ 'विद्रोह करने का अधिकार' भी था।

कन्फ्यूशियस स्थानीय शासक के एक शिक्षक और सलाहकार थे, और उनकी बातें उनके शिष्यों द्वारा उनके जीवन काल के बाद एकत्र की गई और अनालेक्टस् (Analects) के नाम से उनका संकलन किया गया। उनका धर्म की बजाए एक सामाजिक-राजनैतिक-नैतिक दर्शन था। लेकिन चीनी समाज पर उनका प्रभाव संभवतः किसी और व्यक्ति की तुलना में अधिक और चिरस्थायी था, और लगभग एक ईश्वर की तरह उनको आदर दिया जाता है। व्यवस्था और पदानुक्रम का सम्मान करने वाली प्रधानता, जन्म की अपेक्षा शिक्षा की कदर करना और शासन के नैतिक आधार से सम्बन्धित उनकी शिक्षाएँ पारम्परिक चीनी लोकाचार का अभिन्न हिस्सा बन गई हैं।

मोटे तौर पर उसी अवधि के आसपास जब कन्फ्यूशियस ने अपनी शिक्षाओं की व्याख्या की, एक ओर बहुत अलग दर्शन उत्पन्न हुआ, जिसे दाओवाद के नाम से जाना जाता है। इसके विचारों का सम्बन्ध लाओ जी (Lao Zi) से माना जाता है और इसके मूलग्रन्थ को दाओ दे जिंग (Dao De Jing) कहा जाता है। सामाजिक व्यवस्था, संरचना और प्रशासन पर कन्फ्यूशियसवादी जोर देने के विपरीत दाओवाद का मानना था कि मनुष्य को चीजों के प्राकृतिक क्रम के अनुरूप जीवन व्यतीत करना चाहिए। यह 'दाओ' था (जिसको सामान्यतः मार्ग के रूप में अनुवादित किया जाता है)।

दाओवाद एक रहस्यवादी दर्शन था, जो सहजता या स्वाभाविकता और अंतर्ज्ञान या सहजबोध को महत्व देता था। जहाँ कन्फ्यूशियसवादी ग्रन्थ प्रत्यक्ष नैतिकतावादी और उपदेशात्मक हैं उसके विपरीत दाओवादी कृतियाँ अक्सर पहेलियों और दृष्टातों में व्यक्त की जाती हैं।

कन्फ्यूशियसवाद और दाओवाद के बिल्कुल अलग-अलग दो मतों के सह-अस्तित्व ने चीनी मानसिकता और आध्यात्मिक/बौद्धिक दुनियाँ को बहुत गहराई और जटिलता प्रदान की। हालांकि कन्फ्यूशियसवाद को अन्ततः चीनी साम्राज्य की वैचारिक रूढ़िवादिता के कारण अंगीकार किये जाने से कन्फ्यूशियसवाद प्रधान स्थिति में नजर आता था, लेकिन इसने कभी भी दाओवाद के महत्व को विस्थापित नहीं किया, जो विशेष रूप से सामान्य जन और विद्वानों की चीनी कविता, चित्रकला और उनकी आन्तरिक दुनियाँ में रमा हुआ था।

एक विशेषता जो कन्फ्यूशियसवाद और दाओवाद के दर्शनों में समान थी, वह यह थी कि वे मृत्यु के बाद जीवन या ईश्वर को लेकर बहुत चिन्तित नहीं थे। इस तत्व को चीनी विश्वास प्रणाली में बौद्ध धर्म द्वारा प्रस्तावित किया गया था, जो मुख्य रूप से तीसरी शताब्दी सी.ई. के आसपास चीन में प्रवेश करता है। पहली दो एक शताब्दियाँ, जिनमें बौद्ध धर्म द्वारा चीन में अनेक अनुयायिओं को हासिल करना शुरू किया, और फिर एकीकृत साम्राज्य के टूटने और उत्तरी चीन पर विभिन्न खानाबदोष लोगों के आक्रमण के फलस्वरूप सामाजिक और राजनैतिक विभ्रान्ति का काल था। यह संभव है कि इन परिस्थितियों में अनेक लोगों को जीवन के अर्थ, और व्यक्ति द्वारा पवित्र नैतिक जीवन का अनुसरण करने को लेकर सवाल उठाने के लिए प्रेरित किया, विशेषकर उस समय जब उनके इर्द-गिर्द की स्थिति इतनी अराजक थी। बौद्ध धर्म ने इनमें से कुछ सवालों के जवाब दिये। बौद्ध धर्म का जो स्वरूप चीन में प्रधान था, वह महायान बौद्ध धर्म का था। इसके रंगीन अनुष्ठानों और दंत कथाओं और बुद्ध और बोधिसत्वों और छोटे देवताओं की आराधना का व्यवहार चीनी आध्यात्मिक जीवन में एक नया आयाम और समृद्धि जोड़ता है। ऐसे समय में जब शाही व्यवस्था ध्वस्त हो गयी थी तब बौद्ध संघ या मठों की व्यवस्था ने कल्याणकारी उपायों को अन्जाम दिया, जिससे इसे उस समय बौद्ध धर्म के लिए अनुयायियों को प्राप्त करने में मदद मिली।

उस समय तक जब छठी से नौवीं शताब्दियों में सुई (Sui) और तांग (Tang) राजवशों के तहत् एकीकृत साम्राज्य बहाल हो गया था, तब तक बौद्ध धर्म ने चीन में गहराई से जड़ें जमा ली थी और चीनी धार्मिक जीवन, कला और साहित्य, राजनैतिक परंम्पराओं और सामाजिक व्यवहार में बहुत योगदान देकर यह फलता-फूलता रहा। यह धीरे-धीरे भारत और अन्य जगहों से सिद्धान्तों पर कम निर्भर हो गया और बौद्धधर्म के मुख्य चीनी मतों ने कोरिया और जापान जैसे अन्य समाजों को प्रभावित करना शुरू कर दिया। चीन में बौद्ध धर्म के अवशोषण की कहानी सबसे अधिक कहे जाने वाले इस तर्क का खंडन है कि चीन अन्य संस्कृतियों और लोगों के प्रति तिरस्कारपूर्ण रवैया रखता था या यह एक बन्द या संकीर्ण समाज था।

कुल मिलाकर, चीनी विश्वास प्रणाली अलग-अलग और अक्सर विपरीत, दर्शनों और व्यवहारों का एक जटिल मिश्रण थी। कई अन्य देशों की परिस्थितियों के विपरीत, चीन में अधिकांशतः इन विभिन्न मतों को पारस्परिक रूप से अनन्य नहीं देखा गया था। जिस तरह से उनका पालन किया गया था, उसमें बहुत लचीलापन और विविधता थी।

बोध प्रश्न 1

1) तीन मुख्य तरीकों की पहचान कीजिए जिनसे चीन के ऐतिहासिक विकास के बारे में विद्वानों की समझ बदल गई है।

....

....

....

....

2) चीन के दो सबसे पुराने राजवंशों का नाम बताइए।

....

....

....

....

3) चीनी लोगों की तीन प्रमुख विश्वास प्रणालियाँ क्या थी?

....

....

....

....

4) कन्फ्यूशियसवादी दर्शन के कुछ प्रमुख तत्वों को पहचानिए।

....

....

....

....

1.5 चीनी शाही राज्य और स्टेपी (Steppe) की चुनौती

221 बी.सी.ई. में छिन शिहूआंगड़ी (Qin shihuangdi) ने जोउ काल की ढ़ीली-ढाली जुड़ी रियासतों का एकीकरण करके एक केन्द्र द्वारा प्रशासित साम्राज्य बनाया, जो चीनी इतिहास में एक प्रमुख मील का पत्थर था। इसके बाद, चीनी साम्राज्य अनेक रूपान्तरों से गुजरा, और यह कुछ निश्चित कालों में अलग-अलग प्रतियोगी राज्यों में भी टूटा। लेकिन एक व्यवसायिक नौकरशाही के माध्यम से सम्राट द्वारा शासित राज्य अधिकांश समय तक आदर्श बना रहा और यह चीन की वास्तविकता भी रहा, जब तक कि 1911 मे पूरी तरह से शाही व्यवस्था पतन की अवस्था में नहीं पहुँच गई।

पहले सम्राट छिन शिहूआंगड़ी (Qin Shihuangdi) के तहत, साम्राज्य को पहली बार प्रान्तों में विभाजित किया गया था, जो केन्द्रीय रूप से प्रशासित थे। एक समान कानूनी संहिता और एक एकीकृत लिपि को लागू किया गया था। उन्होंने किसानों को स्वतन्त्र भू-धारकों में बदल दिया जिन्हें राज्य को सीधे कर देना पड़ता था। साम्राज्य के विभिन्न हिस्सों को जोड़ने वाली ट्रंक सड़कों का निर्माण किया गया था और भार और नापतौल के तरीकों का मानकीकरण किया गया था। छिन शिहूआंगड़ी (Qin Shihuangdi) ने खानाबदोश लोगों को उत्तर और पश्चिम से अपने साम्राज्य पर छापा मारने या आक्रमण करने से रोकने के लिए, पूर्व राज्यों द्वारा निर्मित विभिन्न दीवारों को जोड़ने और मजबूत करने के लिए प्रसिद्धि प्राप्त की, जिसे आज हम चीन की महान दीवार के रूप में जानते हैं। उसने अपने समय से पहले की पुस्तकों को बड़े पैमाने पर जलाने का आदेश भी दिया ताकि साहित्यिक रिकार्ड उनके शासन के साथ नए सिरे से शुरू हों।

आश्चर्यजनक बात यह है कि चीनी साम्राज्य का यह मूल ढांचा, जो बीसवीं सदी तक बना रहा, इसे छिन शिहूआंगड़ी (Qin Shihuangdi) की मृत्यु से पहले दो दशकों से भी कम समय में बनाया गया था। उनका राजवंश कुछ समय बाद ही पलट दिया गया, जो चीनी इतिहास में अनेक किसान विद्रोहों में से पहला दर्ज किसान विद्रोह का उदाहरण है। इस व्रिदोह के नेता ने हान राजवंश की नींव रखी जो चार शताब्दियों तक चला। हालाँकि चीनी साम्राज्य की संरचना और विशेषताओं को बाद की शताब्दियों में काफी बदल दिया गया था। केन्द्र शासित प्रान्तों के अलावा, अलग-अलग समय में चीनी साम्राज्य परिधि पर अन्य क्षेत्रों को शामिल करता रहा था, जो केन्द्र से कम प्रत्यक्ष हस्तक्षेप के द्वारा शासित थे। राज्य की विचारधारा कन्फ्यूशियसवादी 'सद्‌गुण द्वारा शासन' की धारणाओं से ज्यादा प्रभावित थी ना कि पहले सम्राट द्वारा अपनाई गई कठोर कानूनों और दण्डों पर। सदियों से नौकरशाही का मुख्य भाग शिक्षित विद्वान-अधिकारियों या मन्डारिन (Mandarin) द्वारा संचालित किया जाने लगा, जो मुख्य रूप से विरासत या सिफारिश की बजाए कठोर प्रतियोगी परीक्षाओं के माध्यम से इसकी सेवा में प्रवेश करते थे। इन सभी परिवर्तनों ने चीनी साम्राज्य को अधिक स्थिरता प्रदान की जहाँ छिन (Qin) और हान (Han) राजवंशों के 'पहले साम्राज्य' के बाद लगभग तीन शताब्दियों तक टूटन, विघटन और विभाजन बना रहा, शाही शासन के अन्तिम साढ़े सात शताब्दियों में एकीकृत साम्राज्य बरकरार रहा। भले ही चीन ने इस समय अलग-अलग राजवंशों को देखा जो सत्ता में आये, और जिसका आकार विभिन्न कालों में घटता-बढ़ता रहा और यह बार-बार नागरिक संघर्ष और विदेशी आक्रमणों को झेलता रहा।

अपने शुरुआती दिनों से चीनी साम्राज्य के लिए सबसे बड़ी चुनौती इसके उत्तरी और उत्तर-पश्चिमी सीमावर्ती क्षेत्र में जंगी खानाबदोश लोगों की उपस्थिति थी। चीन की धन-संपत्ति जो इसकी विकसित कृषि व्यवस्था पर आधारित थी, खानाबदोश लोगों के लिए एक बहुत आकर्षण का स्रोत थी, जो अक्सर चीनी राज्य से सैन्य रूप से बेहतर थे,

खासकर उन अवधियों में जब राज्य कमजोर था। जबकि चीन और खानाबदोशों के बीच व्यापार लगभग हर समय चलता रहा लेकिन उन अवधियों में जब खानाबदोश जन-जातियाँ सैन्य रूप से मजबूत हुईं, चीन को स्टेपी से कई आक्रमणों को झेलना पड़ा। तीसरी शताब्दी सी.ई. से शुरू होकर, जब हान साम्राज्य के पतन के बाद एकता के अभाव की अवधि शुरू होती है, खानाबदोश जन जातियों ने बार-बार चीन पर आक्रमण किया और यहाँ तक कि वे उत्तरी चीन के कुछ भागों पर अपना शासन स्थापित करने में भी कामयाब रहे। हालाँकि, यह तेरहवीं शताब्दी में कुबिलाई खान के अधीन मंगोल लोग थे जो पहली बार पूरे चीनी साम्राज्य पर जातीय रूप से गैर चीनी (या गैर हान, जैसा कि इसे कहा जाता है) शासन को स्थापित करने में कामयाब रहे। चार शताब्दियों के बाद, उनका यह साहसिक कारनामा दोहराया गया जब महान दीवार के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र से मान्चू (Manchu) कहे जाने वाले लोगों ने आक्रमण किया और अपना स्वयं का, छिंग (Qing) राजवंश का शासन, स्थापित किया जो चीनी साम्राज्य पर शासन करने वाला अंतिम राजवंश था। उल्लेखनीय बात यह है कि चीनी साम्राज्य पर इन गैर-हान राजवंशों के शासन से ना तो साम्राज्य टूटा ना मौजूदा शाही संस्थाओं का परित्याग किया गया। इसके विपरीत, मंगोल (युवान) और मांचू (छिंग) राजवंशों के तहत साम्राज्य अपेक्षाकृत मजबूत और स्थिर था। इसके बावजूद हान काल के बाद से ही, चीनी राज्य और उसके शासक और अधिकारी स्टेपी से खतरे के बारे में अत्यधिक चिंताकुल थे, जो उन्हें साम्राज्य की सुरक्षा के लिए एकमात्र गंभीर खतरा प्रतीत हो रहा था। यह ध्यान में रखना होगा जब हम चीनी शासकों द्वारा समुद्री सीमा पर संभावित खतरों पर ध्यान देने की सापेक्ष कमी को समझने की कोशिश करते हैं, विशेषतर जब सोलहवीं शताब्दी से पश्चिमी व्यापारियों ने चीनी तटों पर जमघट लगाना शुरू कर दिया था।

1.6 सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन

साम्राज्य पर शासन करने वाली राजनैतिक व्यवस्था प्रमुख निरंतरता के बावजूद, जिस चीन ने 19वीं शताब्दी में पश्चिम का सामना किया था, वह छिन (Qin) सम्राट द्वारा एकीकृत किये गये साम्राज्य से काफी अलग थी। अब हम शाही चीन में दो सहस्राब्दियों के दौरान हुए कुछ प्रमुख सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों को देखेंगे।

अभिजात्य वर्ग से भद्रजन तक

अपने शासन को मजबूत करने के प्रयास में, प्रथम छिन (Qin) सम्राट ने उन शक्तिशाली अभिजात्य वर्ग के परिवारों को करारा झटका दिया था, जो उन्हें चुनौती दे सकते थे। उन्होंने राज्य और आम किसान कर-दाताओं के बीच सीधा संबंध स्थापित करने की कोशिश की। हालाँकि हान शासकों के तहत और बाद की शताब्दियों में बड़े भू-सम्पत्तियों वाले परिवारों, जिनके पास राजनैतिक और सैन्य शक्ति की कमान थी, उन पर आधारित एक कुलीन अभिजात्य वर्ग एक बार फिर से पुनर्जीवित हो गया था। तांग राजवंश के अन्त में हुई खूनी लड़ाइयों और तत्पश्चात दसवीं शताब्दी सी.ई. में आधी सदी के गृह-युद्ध से इस वर्ग को बुरी तरह से आघात पहुँचा था। इसकी शक्ति को एक ओर झटका बाद के सम्राटों द्वारा स्वयं के हाथों में सैन्य शक्ति को केन्द्रीयकृत करने में सफलता के कारण लगा था। पर शायद अभिजात्य वर्ग की वास्तविक समाप्ति प्रतियोगी नागरिक सेवा परीक्षाओं के माध्यम से नौकरशाही के भर्ती के विस्तार से सामाजिक आधार के व्यापक हो जाने से हुई थी। लगभग 1000 सी.ई. से नौकरशाही में प्रवेश पाने का यह मुख्य मार्ग बन गया था। इसका मतलब यह था कि भूमि और वाणिज्यिक सम्पत्ति के आधार पर एक बहुत बड़ा कुलीन समूह था, जो अपने बेटों को शिक्षा के माध्यम से योग्य बनाकर उनका प्रवेश नौकरशाही में करवाकर सत्ता हासिल कर सकता था। इस सामाजिक स्तर के लोगों को भद्रजन के रूप में जाना जाने लगा था।

जातीय और सांस्कृतिक विविधता

एक विदेशी धर्म बौद्ध धर्म के चीन में प्रवेश और हान साम्राज्य के टूटने के बाद सदियों से चली आ रही खानाबदोशों की चढ़ाइयों ने एक ऐसे समाज का विकास किया, जो पहले की तुलना में कहीं अधिक मिश्रित और जटिल था। चीनी और गैर चीनियों के बीच व्यापार और सामाजिक संबंध अन्तर्विवाह सहित, विशेषकर उत्तर मे काफी बढ़ गये थे। महान तांग राजवंश (618-907 सी.ई.) का युग महान विश्व-बन्धुत्व और विदेशी प्रभाव और विदेशी व्यापार के लिए खुलेपन का काल था। यह सब चीन में एक बहुत अधिक विविधतापूर्ण समाज और संस्कृति का कारण बना, जिसने देशी और विदेशी रीति-रिवाजों और परंपराओं को मिश्रित किया, चाहे वे पोशाक, स्वाद, प्रदर्शन कला, विनोद और खेल-कूद और इसी तरह के पहलू थे। चूंकि ऐसा उत्तर चीन में अधिक हुआ था, इसलिए चीन में उत्तर-दक्षिण की एक सांस्कृतिक विभाजन की शुरुआत देखने को मिली।

अर्थव्यवस्था का बढ़ता वाणिज्यीकरण

चीन में शुंग (Song) काल (960-1279 सी.ई.) में उल्लेखनीय आर्थिक वृद्धि और अन्तर्क्षेत्रीय वाणिज्य का विकास देखने को मिला। मुख्य रूप से अपने स्वयं के निर्वाह के लिए और जमींदारों को लगान का भुगतान करने के लिए उत्पादन करने वाले किसानों के पहले वाले प्रारूप में बदलाव आने शुरू हो गये और किसान पहले से अधिक बाजार के लिए उत्पादन करने लगे। उत्तर में एकता के अभाव और भारी हमलों के वर्षों में तेजी से चीन के अधिक उपजाऊ मध्य और दक्षिणी क्षेत्रों में विशाल स्तर पर प्रवासन और बसने की प्रक्रिया शुरू हुई। पानी की प्रचुरता और वहाँ की अनुकूल जलवायु और चावल की नई, जल्दी पकने वाली किस्मों की शुरुआत ने कृषि उत्पादकता में बहुत वृद्धि की। कुछ क्षेत्रों में कपास या चाय जैसी विशिष्ट फसलों का विशिष्टीकरण बढ़ जाने से, ये फसलें पूरी तरह से बाजार के लिए पैदा की जाने लगी। बढ़ते हुए अन्तर्क्षेत्रीय वाणिज्य ने मुद्रा के महत्व को बढ़ाया और मुद्रा के नये रूपों के साथ प्रयोग किये गये, जिसमें दुनियाँ की सबसे शुरुआती कागज की मुद्रा भी शामिल थी। प्रमुख कर सुधार संस्थापित किये गये जिससे भुगतान के पहले के श्रम और वस्तु के रूप में भुगतान के तरीके पैसे के भुगतान के रूप में बदल गये। यह इस अवधि से था कि वाणिज्य से प्राप्त राजस्व राज्य के भू-राजस्व से अधिक हो गया।

आर्थिक विकास के परिणामस्वरूप बाजार आधारित कस्बों और शहरी केन्द्रों का विस्तार हुआ, और पहले के समय की भव्य प्रशासनिक राजधानी वाले शहरों के विपरीत, काईफेन्ग (Kaifeng) और सुजोउ (Suzhou) जैसे महान वाणिज्यिक शहरों का उदय हुआ। कुछ वर्गों और सामाजिक समूहों के बीच समृद्धि बढ़ने से साक्षरता का प्रसार हुआ, जिसको वुड ब्लॉक प्रिन्टिंग के आविष्कार से सहायता मिली। शहरी जीवन के परिणामस्वरूप विशिष्ट रूप से संस्कृति के नये और लोकप्रिय रूपों को बढ़ावा मिला। हालाँकि, भले ही समाज के अभिजात्य वर्ग और औसत दर्जे के समृद्ध वर्गों का जीवन अधिक समृद्ध और रंगीन हो गया, लेकिन यह स्पष्ट था कि विकास के परिणामस्वरूप किसान वर्ग के गरीब तबके हाशिए पर पहुँच गये और इसके कारण कम उपजाऊ ग्रामीण इलाके के अधिक बंजर क्षेत्रों से शहरों में संकट-प्रेरित प्रवासन भी बढ़ गया।

जनसंख्या वृद्धि

कृषि उत्पादकता में वृद्धि भी शाही चीन की पिछली कुछ शताब्दियों में जनसंख्या में जबरदस्त वृद्धि का आधार थी। यह अनुमान लगाया गया है कि जबकि चीन की जनसंख्या 1000 सी.ई. में लगभग 100 मिलियन थी, यह प्रारंभिक 17 वीं शताब्दी में बढ़कर 260 मिलियन हो गयी थी। छिंग (Qing) राजवंश (1644-1911) के तहत, जनसंख्या फिर

से दुगनी हो कर लगभग 500 मिलियन हो गयी थी। इसके परिणामस्वरूप भूमि पर जबरदस्त दबाव पड़ा, खासकर चूंकि उपलब्ध अक्षत भूमि की मात्रा में कमी आई थी, और इसलिए भी क्योंकि चीनी समाज ने एक परिवार के बेटों के बीच भूमि के समान वितरण की प्रणाली का पालन किया, जिससे समय के साथ एक परिवार की भू-धारकता (जोत) में भारी कमी आ गई थी। इन परिस्थितियों में अनेक किसानों ने अपनी भूमि को त्यागने का निर्णय लिया, जो अब उन्हें जीवित रखने में सक्षम नहीं थी। तब इन्हें अक्सर जमींदारों द्वारा अधिगृहीत कर लिया जाता था, जिससे भूमि का संकेन्द्ररण विशेष रूप से अधिक उपजाऊ क्षेत्रों में बढ़ गया था। अनेक भूमिहीन किसानों में से या तो उन्होंने काश्तकार के रूप में खेती करने का रूख किया या गैर-कृषि व्यवसायों को जीवित रहने के लिए अपनाया या वह कम जनसंख्या वाले क्षेत्रों की तरफ या कम उपजाऊ क्षेत्र में आजीविका के लिए चले गये। कुछ, विशेष रूप से दक्षिण पूर्व एशिया में जा बसे, हालाँकि अधिकारियों द्वारा इसके लिए असहमति प्रकट की गई थी। अनेक किसानों ने गुप्त संस्थाओं और विद्रोही आन्दोलनों के जत्थों में बढ़ोत्तरी की जो उन्हें कुछ हद तक संरक्षण और आशा प्रदान करते थे।

अनेक शताब्दियों की आर्थिक वृद्धि और अपेक्षाकृत स्थिर राजनैतिक परिस्थितियों ने चीन को एक ऐसे स्तर पर ला खड़ा किया था जो औद्योगिक क्रान्ति की पूर्व सन्ध्या पर यूरोप सहित दुनिया के अन्य भागों की तुलना में कई प्रकार से अधिक उन्नत था। हालाँकि, इस आभासी सफलता ने ऐसी घटनाओं को जन्म दिया जिसनें समग्र प्रणाली को कमजोर कर दिया। कुल मिलाकर, 18वीं शताब्दी के अन्त में और 19वीं शताब्दी के प्रारंभ तक, चीन में एक बड़े पैमाने का संकट मंडरा रहा था।

बोध प्रश्न 2

1) छिन शिहूआंगड़ी (Qin Shihuangdi) कौन थे? और उनकी मुख्य उपलब्धियाँ क्या थी?

....

....

....

....

....

2) दो गैर-हान (चीनी जातीयता के नहीं) राजवंशों का नाम बताइए जिन्होंने चीनी साम्राज्य पर शासन किया था?

....

....

....

....

....

3) लगभग 100 शब्दों में स्पष्ट कीजिए कि किस तरीके से चीनी समाज और अर्थव्यवस्था शताब्दियों में बदल गयी थीं?

....

....

....

....

....

....

1.7 छिंग (Qing) राजवंश

जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, सामान्यतः छिंग (Qing) काल को विफलता के नजरिए से देखा जाता रहा है क्योंकि इस राजवंश को पश्चिम के हाथों चीन के अपमान और शाही व्यवस्था के पतन के लिए जिम्मेदार माना जाता रहा। लेकिन चीनी इतिहास के कुछ काल ही इस तरह के प्रमुख पुनर्मूल्यांकन से गुजरे हैं जैसा हाल के वर्षों में छिंग काल। अब इसे पतन और विफलता के दौर के रूप में देखने के बजाए, यह व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है कि छिंग राजवंश के तहत चीन आकार, शक्ति और समृद्धि के मामले में एक ऊँचाई पर पहुँच गया था।

इस वंश की स्थापना महान दीवार के उत्तर-पूर्व में मन्चुरिया नामक क्षेत्र में एक गैर-हान लोगों द्वारा की गई थी, जिन्होंने 1644 में अन्तिम 'युद्ध' चीनी राजवंश, मिंग को उखाड़ फेंका था। इस बारे में बहुत कुछ लिखा गया है कि इन विदेशी सम्राटों ने कन्फ्यूशियसवादी सम्राटों के रूप में कितनी सफलता पूर्वक शासन किया और आरंभ में एक प्रतिरोध की अवधि के बाद चीनी अभिजात्य वर्ग को स्वयं का सहयोगी बना कर उससे सेवाएँ ली। हालाँकि, समान के रूप से यह भी महत्वपूर्ण है कि मांचू शासकों ने उन विशाल क्षेत्रों को चीनी साम्राज्य में मिलाने के लिए विविध तरीकों को इस्तेमाल किया जो इससे पहले इसका हिस्सा नहीं थे। इसमें मंगोलिया के भाग, चीनी तुर्केस्तान (बदला हुआ नाम शिनजीयांग (Xinjiang), तिब्बत और सूदूर दक्षिण पश्चिम के हिस्से सम्मिलित थे। इन क्षेत्रों पर शासन करने में, छिंग (Qing) ने हमेशा वही कार्यप्रणाली लागू नहीं की जिसका उन्होंने बाकी चीन पर शासन करने के लिए इस्तेमाल किया था, लेकिन उन्होंने कुशलता से अपनी पद्धतियों और अपनी अपेक्षाओं को अनुकूलित किया। 18वीं शताब्दी के बाद तक विशाल क्षेत्र पर उनके शासन को वस्तुतः कोई चुनौती नहीं थी। यह दर्शाता है कि छिंग अपने सामने आने वाली चुनौतियों के समाधान के लिए अत्यधिक लचीले और रचनात्मक हो सकते थे।

छिंग (Qing) ने एक ऐसी प्रशासनिक प्रणाली विकसित की जिसे इतने विशाल और विषमरूपी क्षेत्र के संचालन के लिए दुनियाँ में कहीं भी अपने समय की सबसे प्रभावी प्रणाली के रूप में देखा जा सकता है। 1660 के दशक से 18वीं शताब्दी के अन्त तक क्रमवार शासन करने वाले तीन छिंग सम्राट, इसके अलावा विशेष रूप से, सक्षम और मेहनती शासक थे, जो साम्राज्य के विभिन्न हिस्सों के मिजाज पर कड़ी नजर रखते थे। हालांकि एक बड़ी समस्या यह थी कि तेजी से बढ़ती जनसंख्या और अर्थव्यवस्था की जरूरतों को पूरा करने के लिए नौकरशाही का विस्तार नहीं किया गया था, और ना ही अधिकारियों के वेतन में वृद्धि की गई थी। इससे प्रांतों में जो कुछ घटित हो रहा था, उस पर केन्द्रीय निगरानी कम हो रही थी, और प्रशासनिक अक्षमता, भ्रष्टाचार और नैतिक अधोगति बढ़ रही थी। एक अन्य समस्या यह थी कि छिंग जिन्होंने अपने सैन्य बलों का इस्तेमाल इतनी कुशलता से प्रारंभिक दशकों में, चीन और उसके परिधीय क्षेत्र को जीतने के लिए किया था, वहीं बाद में इसके लिए अधिक चिंतित हो गये कि कैसे सैन्य प्रतिष्ठान को उनके स्वयं के शासन के लिए खतरा बनने से रोका जाए। इससे सैन्य संगठन का एक ऐसा रूप सामने आया जो अवरोधों और संतुलनों से भरा हुआ था, और तीव्रता से नये खतरों का जवाब देने के लिए अनुकूल नहीं था, जैसे कि पश्चिमी शक्तियों द्वारा समुद्री

सीमा पर उत्पन्न खतरे या सामूहिक जन विद्रोहों द्वारा खतरे, जो उन्नीसवीं शताब्दी में प्रस्फूटित होने लगे थे। वित्तीय समस्याओं, विशेष रूप से चाँदी की कमी, और नागरिक और सैन्यकर्मियों के बीच अफीम-धूम्रपान की आदत का प्रसार अन्य समस्याएँ थी, जिन्होंने उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में छिंग प्रशासन को प्रभावित किया।

फिर भी, यह कहना गलत नहीं होगा कि छिंग (Qing) सरकार और अभिजात्य वर्ग अपने शासन की अंतिम शताब्दी में प्रमुख चुनौतियों का जवाब देने और बड़ी पहल करने में असमर्थ हो गये थे। अफीम समस्या के समाधान के लिए अपने अधिकारियों के बीच 1830 के दशक में सम्राट द्वारा शुरू की गई महान अफीम बहस, अधिकारियों और विद्वानों द्वारा बदलती विश्व व्यवस्था और विशेष रूप से पश्चिम को सुव्यवस्थित ढंग से समझने के प्रयास और उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य के महा-विद्रोहों को छिंग और विद्वान भद्रजनों द्वारा निर्णायक रूप से खत्म करना-सभी इस बात का संकेत देते हैं कि छिंग की अध्यक्षता में चल रही शाही व्यवस्था आसानी से ध्वस्त नहीं हुई।

1.8 उन्नीसवीं शताब्दी से पूर्व चीन और विश्व

इस अंतिम भाग में, हम उन्नीसवीं शताब्दी से पहले विश्व के साथ चीन के संबंधों के कुछ पहलुओं पर विचार करेंगे। चूंकि बाद की एक इकाई में आप पारम्परिक चीन के विदेशीय सम्बन्धों की कुछ मुख्य विशेषताओं के बारे में जानेंगे, इसलिए यह भाग पश्चिमी दुनियाँ के बाकी देशों के साथ पूर्व आधुनिक चीन के सम्बन्धों के बारे में पश्चिमी भाषा के साहित्य में विकसित की गई कुछ पारंपरिक अवधारणाओं पर ध्यान केन्द्रित करेगा और यह विश्लेषण करेगा कि वे वास्तव में कितनी उपयोगी हैं।

चीनी केन्द्रवाद (Sinocentrism): जोंगुओ (Zhongguo) और तियानशया (Tianxia)

इस इकाई की शुरुआत में हमनें देखा है कि जोउ काल के दौरान, चीन के लिए जोंगुओ का नाम पहली बार चीन में केन्द्रीय राज्यों को संदर्भित करने के लिए इस्तेमाल किया गया था। हालाँकि, जोंगुओ (Zhongguo) को 'मध्य राज्य' के रूप में भी अनुवादित किया जा सकता है और इसका इस्तेमाल यह तर्क देने के लिए किया गया है कि चीनी स्वयं को दुनियाँ के केन्द्र के रूप में समझते थे और हर किसी को हेय दृष्टि से देखते थे। जैसा कि हमने देखा है कि अलग-अलग समय पर चीनी अपने समान या उससे भी अधिक सैन्य या सांस्कृतिक शक्ति के अस्तित्व के बारे में अवगत थे। उदाहरण के लिए, बौद्ध धर्म में चीन की जड़ें जम जाने के बाद कई शताब्दियों के लिए चीनी बौद्ध शासकों, भिक्षुओं और सामान्य जनों ने यह भी माना कि भारत, बौद्ध धर्म का मूल घर, केन्द्रीय क्षेत्र था, जबकि चीन सिर्फ एक 'सीमावर्ती' क्षेत्र था। एक ओर अवधारणा जो बहुत चर्चा में रही है वह है तियानशया या 'सब स्वर्ग तले'। यह माना जाता था कि चीन के सम्राट को, 'सभी स्वर्ग के तले' की अध्यक्षता करनी थी, और इसका उपयोग चीनी केन्द्रवाद या चीनी-केन्द्रीयता की धारणा को बल देने के लिए किया जाता है। हालाँकि, यह तर्क दिया गया है कि चीनी दुनियाँ के विश्व दृष्टिकोण में, तियानशया उन क्षेत्रों को जिक्र करने से थोड़ा अधिक था, जो केन्द्रशासित चीनी साम्राज्य के संस्पर्शी थे लेकिन जो प्रत्यक्ष रूप से सम्राट द्वारा शासित नहीं थे – मोटे तौर पर कहा जाए तो पूर्वी एशिया के अन्य भाग, मध्य एशिया और दक्षिण पूर्व एशिया के कुछ भाग। हालांकि उसने अन्य लोगों के ऊपर श्रेष्ठता के प्रवचन या बयानबाजी को बनाए रखने में शाही दरबार की सेवा की, लेकिन हमें यह विश्वास नहीं करना चाहिए कि उनकी सभी या यहाँ तक कि अधिकांश विदेशी नीतियाँ और कार्य एक चीनी केन्द्रित ब्रह्मांड के दृष्टिकोण से उत्पन्न हो रही थी। अन्य बड़ी शक्तियों की तरह, चीनी शासकों की विदेश नीतियाँ ज्यादातर उनके स्वयं के हितों और प्रचलित सत्ता समीकरणों की व्यवहार कुशलता से जन्म लेती हैं।

शुल्क व्यवस्था

जॉन किंग फेयरबैंक और अमेरिकी चीनी अध्ययन (Sinology) के प्रभाव के तहत्, उन्नीसवीं शताब्दी के चीन के विदेशी सम्बन्धों का वर्णन करने के लिए अत्यधिक व्यापक ढ़ाँचे के रूप में 'शुल्क व्यवस्था' (tribute) शब्द का उपयोग करना आम हो गया। इस अवधारणा के अनुसार चीन ने केवल उन राज्य और लोगों के साथ सम्बन्ध बनाए रखे, जो चीनी सम्राट को शुल्क अर्पित करते थे और इस प्रकार चीनी सम्राट की श्रेष्ठता को स्वीकार करते थे। बदले में, यह माना गया कि चीनी सम्राट मूल्यवान उपहार वापिस भेजेंगे और आगुन्तकों को व्यापार करने की भी अनुमति भी देंगे, जो विदेशियों के लिए इस अनुष्ठान में भाग लेने की प्रेरणा थी। यहाँ निहितार्थ एक चीनी असाधारणता से है। दूसरे शब्दों में, यह विचार कि चीन में स्वहित और लाभ की सामान्य गणनाओं के आधार पर अपने विदेशी सम्बन्धों का संचालन नहीं किया, लेकिन उनका प्रयोजन मुख्य रूप से अपनी प्रतिष्ठा की चिन्ता करना था। अनेक विद्धानों ने हालाँकि अब विभिन्न आधारों पर चीन के विदेशी सम्बन्धों के वर्णन के रूप में शुल्क प्रणाली की वैधता को अस्वीकार कर दिया है। एक बात यह है कि यह चीनी शासकों द्वारा प्रयुक्त नीतियों और संस्थाओं की विशाल विभिन्नता के साथ न्याय नहीं करती है, जो विभिन्न प्रकार के विदेशियों के बीच अन्तर करती थी और 'सबके लिए एक मानक ठीक था' के नियम को लागू नहीं करती है। उदाहरण के लिए, अधिकांश पश्चिमी देशों को चीन के साथ व्यापार करने की स्वतंत्रता दी गयी थी, और इसके लिए किसी शुल्क के प्रस्तुत करने की आवश्यकता नहीं थी। यह बात जापान और विभिन्न मंगोल लोगों पर भी लागू होती है। दूसरे, जिस हद तक शुल्क आधारित सम्बन्धों को व्यवहार में लाया गया वह केवल कुछ सीमित अवधियों (मुख्यतः मिंग और छिंग (Qing) के कुछ समय में) में ही सही था और शायद ही इससे पहले के समय में लागू किया गया था। तीसरे, मिंग के दौरान एक सीमित अवधि को छोड़कर, राज्य द्वारा नियंत्रित शुल्क आधारित व्यापार चीन द्वारा किये जा रहे बाहरी या विदेशी व्यापार का मुख्य रूप नहीं था।

मुक्त व्यापार के लिए छिंग (Qing) का विरोधाभाव

यह तर्क कि छिंग 'मुक्त व्यापार' का विरोध कर रहे थे, अफीम युद्धों और तत्पश्चात् उन्नीसवीं शताब्दी में चीन पर लादी गई असमान संधि व्यवस्था का औचित्य सिद्ध करने के लिए केन्द्रीय पश्चिमी विचार का तर्क था। जैसा कि अब अच्छी तरह से जाना जा चुका है और समझा जाता है, लगभग 1500 से, चीन एक वैश्विक वाणिज्य में प्रमुख भागीदार था जिसके तहत् अन्य वस्तुओं के साथ चीनी चाय, चीनी मिट्टी के बर्तन और रेशम बढ़ती मात्रा में पूरी दुनियाँ में पहुँच रहे थे और अमेरिका से चीन में चाँदी आ रही थी। यह सच है कि कुछ मिंग शासकों ने व्यापार को नियंत्रित करने और उस पर एकाधिकार स्थापित करने का प्रयास किया। भले ही यह नीति लम्बे समय तक नहीं चली, लेकिन अन्त के मिंग शासकों ने अन्य देशों (जापान को छोड़कर) के साथ निजी व्यापार पर अधिकारिक रूप से प्रतिबन्ध कायम रखा। हालाँकि छिंग ने, चीन पर अपना शासन सुदृढ़ करने के बाद, 1684 में प्रतिबन्ध हटा दिया और सभी देशों के विदेशी व्यापारियों का व्यापार में स्वागत किया गया। रूसी और जापानी को छोड़कर, जिनके लिए विशेष व्यवस्था थी, विदेशी व्यापारी, बड़े या छोटे, किसी भी बन्दरगाह पर आने के लिए स्वतन्त्र थे जब तक कि उनके पास व्यापार करने के लिए वस्तुएँ थीं। छिंग ने विदेश व्यापार से प्राप्त राजस्व को महत्व दिया और इसे सुविधाजनक बनाने और नियंत्रित करने के लिए संस्थाऐं और कार्यप्रणालियाँ स्थापित की। छिंग के तहत विदेश व्यापार की अत्यधिक तीव्र वृद्धि सबसे अच्छा सबूत है कि उन्होंने विदेशी व्यापार को हतोत्साहित नहीं किया। अन्ततः, छिंग (Qing) द्वारा स्थापित

व्यापार प्रणाली छिंग के विदेशी व्यापार के प्रति विरोधाभाव के कारण नहीं बल्कि उसके प्रशासनिक ढ़ाँचे की कमजोरी और क्षय के कारण ध्वस्त हो गयी।

बोध प्रश्न 3

1) छिंग (Qing) वंश के शासकों की मूल मातृ-भूमि क्या थी?

....

....

....

....

....

3) चीनी-केन्द्रवाद की अवधारणा से आप क्या समझतें हैं?

....

....

....

....

....

3) आप विदेशी लोगों और विदेशी व्यापार के प्रति छिंग के रवैये को कैसे चित्रित करेंगे।

....

....

....

....

....

1.9 सारांश

इस इकाई में हमने सीखा :

- चीन के समाज, राज्य व्यवस्था, संस्कृति और अर्थव्यवस्था के विकास के कुछ मुख्य चरणों के बारे में।
- यह कि चीन के अतीत और विशेष रूप से उसके अन्तिम राजवंश छिंग (Qing) के बारे में विद्वानों की समझ में अनेक बदलाव आए हैं। आधुनिक दुनियाँ की चुनौतियों का सामना करने के लिए चीन की 'विफलता' का पश्चिम में उत्पन्न वर्णन, और चीन की परम्परागत सभ्यता और संस्थाओं में इसके कारणों को खोजने का प्रयास अब काफी हद तक अप्रतिष्ठित हो चुका है।
- यह कि चीनी सभ्यता संकीर्ण या परिवर्तन की प्रतिरोधी होने की बजाए, शताब्दियों के दौरान इसमें जबरदस्त परिवर्तन आए। गैर-चीनी लोगों के प्रभावों का अवशोषण और विशेष रूप से अन्तिम सहस्राब्दी में अनवरत विकास के परिणामस्वरूप एक जटिल एवं उन्नत समाज और अर्थव्यवस्था का उदय हुआ।

- चीनी साम्राज्य का कई शताब्दियों में बार-बार विस्तार हुआ या इसका आकार संकुचित हुआ। आंतरिक प्रवासन और अन्तर्क्षेत्रीय व्यापार के माध्यम से एक मजबूत केन्द्रीयकृत राजनैतिक संरचना और बढ़ते हुए क्षेत्रीय एकीकरण के बावजूद, इसने कई विघटन और बिखराव की अवधियों का भी अनुभव किया।
- चीन का बाहर की दुनियाँ के साथ व्यापक संपर्क था, और कई क्षेत्रों के साथ इसके व्यापारिक संबंध कायम थे। कुल मिलाकर चीनी शासकों ने कई प्रकार की नीतियों का अनुसरण किया और विदेशों और विदेशी लोगों के साथ व्यवहार में काफी लचीलापन दिखाया।

इस पाठ में चीनी शब्दों के उच्चारण पर एक नोट :

- 'Qi' (जैसे किन, किंग) का उच्चारण 'छी' (छिन, छिंग) की तरह किया जाता है।
- 'Xia' (जैसे तियानशया) का उच्चारण 'शया' की तरह किया जाता है।
- 'Zh' (जैसे झाउ, झोंगुओ) का उच्चारण कुछ हद तक 'ज' जैसे है।
- 'Ong' (जैसे झोंग और सोंग में) का उच्चारण 'ऊंग' की तरह किया जाता है।

1.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) भाग 1.2 देखें।
2) भाग 1.3 देखें।
3) भाग 1.4 देखें।
4) भाग 1.4 देखें।

बोध प्रश्न 2

1) भाग 1.5 देखें।
2) भाग 1.5 देखें।
3) भाग 1.6 देखें।

बोध प्रश्न 3

1) भाग 1.7 देखें।
2) भाग 1.8 देखें।
3) भाग 1.8 देखें।

चीनी राजवंशों का समय काल (Timeline)

वंश	काल-अवधि
शांग	लगभग 1600–1050 बीसी.ई.
जोउ (Zhou)	1046–256 बीसी.ई.
युद्धरत राज्य	475–256 बीसी.ई.

छिन (Qin)	221–206 बीसी.ई.
हान	206 बीसी.ई. – 220 सी.ई.
छहः राजवंश	220 सी.ई.–589 सी.ई.
सुई (Sui)	581 सी.ई. – 618 सी.ई.
तांग	618 सी.ई. – 906 सी.ई.
पाँच राजवंश	907 सी.ई. – 960 सी.ई.
शुंग (Song)	960 सी.ई. – 1279 सी.ई.
युआन	1279 सी.ई. – 1368 सी.ई.
मिंग	1368 सी.ई. – 1644 सी.ई.
छिंग (Qing)	1644 सी.ई. – 1912 सी.ई.